शोध मंथन Vol. XVI No.2 Apr.- June. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *https://anubooks.com/journal-volume/shodhmanthan-vol-xvi-june-2025-no2*

भारत में महिला उद्यमिता–चुनौती तथा समाधान

प्राप्तिः 10.03.2025
स्वीकृतः 20.04.2025

डॉ. कविता वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर (समाजशास्त्र)
कु मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर
महविद्यालय, बादलपुर
ईमेलः kavitasahdev@gmail.com

26

सारांश

उद्यमिता आज के समय की आवश्यकता है, भारत में बढ़ते मानव संसाधन के उचित दोहन के लिए आवश्यक है कि उद्यम के माध्यम से व्यक्ति, समुदाय व देश का विकास हो और वहीं दूसरी ओर महिला उद्यमी को प्रोत्साहित कर लैंगिक समानता व संतुलित आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। हमारे देश में महिला उद्यमिता की संख्या पिछले वर्षों से निरंतर बढ़ रही है तथा राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय महिला उद्यमी अपनी अनूठी पहचान भी बना रही है। हालांकि अभी भी पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था तथा प्रशिक्षण व जागरूकता के अभाव में महिला उद्यमियों को बहुत सी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिसके कारण उनकी संख्या तुलनात्मक रूप से कम है तथा देश के विकास में पर्याप्त योगदान नहीं दे पा रही हैं। यह शोध पत्र वर्तमान की इसी स्थिति के विश्लेषण के लिये प्रस्तुत किया गया है कि कौशल विकास के इस युग में महिला उद्यमियों की स्थिति व् समस्या का अध्ययन कर उसके समाधान के सुझाव बताये जा सके।

मुख्य बिंदु.. *महिला, उद्यमिता, विकास, समस्याएँ*

महिला उद्यमिता का तात्पर्य महिलाओं द्वारा स्वयं का व्यवसाय एवं उद्यम शुरू करने से है। इसमें महिला द्वारा किसी व्यवसाय या उद्यम को शुरू करने, व्यवस्थित करने तथा जोखिम उठाने की पहल को कहा जाता है। महिला उद्यमी आर्थिक विकास को गति देने के साथ रोजगार सृजित करने तथा नवाचार को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में महिला उद्यमिता पिछले कुछ वर्षों से लगातार बढ़ रही है, परंपरागत रूप से हमारे देश में महिलाएं सामान्यता छोटे पैमाने के तथा अनौपचारिक कार्यों में ही शामिल रहीं हैं किंतु अब महिलाएं अधिक अभिनव उद्यमशील उपक्रमों को अपनाने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य कर रही है।

भारत में महिलाएं अब अपना कौशल रचनात्मक कार्य और दृढसंकल्प का प्रदर्शन करते हुए प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य व सामाजिक उद्यमिता जैसे विभिन्न क्षेत्रों में व्यवसाय शुरू कर रही है। हमारे देश में महिला उद्यमिता के सामने आने वाली चुनौतियों और संभावनाओं का अध्ययन और समाधान की आवश्यक है ताकि वर्तमान परिदृश्य में महिलाओं के सशक्तीकरण और उन्नति के लिये प्रभावी

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.26

रणनीति विकसित की जा सके। उद्यमिता में भारतीय महिलाओं की स्थिति को देखने से ज्ञात होता है कि दशको से भारत में तीव्र आर्थिक वृद्धि होते हुए भी महिला उद्यमियों की संख्या काफी कम है। भारत में केवल बीस प्रतिशत उद्यम महिलाओं के स्वामित्व वाले हैं और कोविड महामारी ने महिलाओं उद्यमियों के इस प्रतिशत को और अधिक प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया हैक। महिला उद्यमिता एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें उद्यमशीलता की गतिविधियों का प्रबंध महिलाओं द्वारा किया जाता है।[1]

इस प्रक्रिया में उत्पादन के साधनों जैसे भूमि, श्रम, पूंजी का प्रबंध, जोखिम उठाना, निर्णय लेना और समग्र व्यवसाय प्रबंधन शामिल होता है। जीवन के सभी पक्षों में महिलाये पुरुषों के साथ निरंतर प्रतिस्पर्धा कर रही है, जो कि यह दर्शाता है कि वर्तमान की महिला जीवन के किसी भी क्षेत्र में अपनी क्षमता साबित कर सकती है हालांकि महिलाओं ने समाज की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है लेकिन उद्यमिता के रूप में उनकी पूरी क्षमता अभी तक सामने नहीं आई है। भारत सरकार के अनुसार 'महिला उद्यमी वह होती है जिसके स्वामित्व नियंत्रण में कम से कम 51 प्रतिशत पूंजी होती है और जो अपने उद्यम से कम से कम 51 प्रतिशत रोजगार महिलाओं को देती है, जो महिलाएं आत्मनिर्भर बनने की इच्छा से प्रेरित होकर उद्यमिता के क्षेत्र में कदम रखती हैं वे इस परिभाषा में आती है और जो महिला बाध्य होकर या परिस्थितिवश उद्यमिता को अपनाती हैं वे इस श्रेणी में नहीं आती'।[2]देश में स्वतंत्रता के साथ ही तथा संविधान के लागू होने से महिला सशक्तिकरण की दिशा में नए अध्याय लिखे गए जिससे महिलाएं अपनी पारंपरिक छवि, जो कि घर की चारदीवारी तक सीमित रही, से बाहर निकलकर अपने विकास की नई श्रृंखला बना रही है। कहा जाता है कि किसी सभ्यता की प्रगति और उसकी कमियों को समझने के लिए समाज में महिलाओं की स्थिति को समझना जरूरी है। हमारे देश में महिलाओं ने तरक्की का एक लंबा सफर तय किया है। ऋग्वेद काल में विदुषियों और सन्यासनियो से लेकर आज सूचना प्रौद्योगिकी, राजनीति, उद्योग, सशस्त्र सेना और अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों तक महिलाओं का बोलबाला रहा है। कहा जाता है कि हमारे परंपरागत पुरुष प्रधान समाज से संघर्ष करके ही उन्होंने अपनी शक्तिशाली और स्वतंत्र पहचान कायम की है।

वर्तमान स्थिति

विभिन्न अध्ययनों के अनुसार महिलाये जीडीपी में भी योगदान दे रही है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा एक अध्ययन में क्रिस्टीन लैगार्ड के अनुसार अगर महिला कार्यकर्ताओं की संख्या पुरुषों के समान बढ़ जाती तो वर्तमान भारत का सकल घरेलू उत्पाद जीडीपी 27 प्रतिशत तक ऊपर जा सकता है।[3] हाल ही में विकास अर्थशास्त्र और युगोव द्वारा किये गए अनुसंधान ने कुछ आंकड़े उपलब्ध कराए हैं जिसमें 800 स्टार्टअप में से केवल 72 ही महिलाएं द्वारा स्थापित किये गए है।

'द वेल्थ वाल्हस' पुस्तक की लेखिका श्रेयसी सिंह ने 1 लाख से अधिक उच्च आय वाले लोगों का साक्षात्कार किया जिनके पास पाँच मिलियन डॉलर से अधिक संपत्ति है, उन्होंने कहा कि एचएनआई में 10प्रतिशत से कम महिलाएं शामिल हैं।[4] फेसबुक के सर्वेक्षण ने कुछ उत्साहवर्धक आंकड़े दिए है उससे प्रदर्शित होता है कि भारत में पांच में से चार महिलाएं अपना व्यवसाय शुरू करना चाहती है।[5]दुनिया भर कीं युवा महिलाओं में उद्यमशीलता की भावना तेजी से बढ़ रही है, शोध ा से पता चलता है कि भारत की 45 फीसदी महिलाओं में अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने का

जुनून बढ़ा है। अमरीकी कंपनी मास्टरकार्ड ने यह अध्ययन किया है। इस रिपोर्ट के अनुसार 46 फीसदी जेनरेशन मिलेनियम (आयु 29–44) महिलाओं ने और 48 फीसदी जेनरेशन जेड (आयु 21–26) महिलाओं ने व्यवसाय शुरू करने की इच्छा जताई है। गौतम अग्रवाल, अध्यक्ष दक्षिण एशिया डिवीजन मास्टर कार्ड के अनुसार 89 फीसदी महिला व्यवसायियों को अगले पांच वर्षों में आमदनी बढ़ाने की उम्मीद है, वहीं पुरुषों में यह आंकड़ा 87 फीसदी है, 38 फीसदी महिलाओं ने माना कि अगले पांच सालों में व्यवसाय 50 प्रतिशत से ज्यादा बढ़ सकता है और 41 फीसदी महिलाएं अपने व्यवसाय को स्थापित करने के लिए बेहतर वित्तीय सहायता और फंडिंग विकल्पों की तलाश में है। 38 फीसदी महिलाएं कोडिंग जैसी तकनीकी स्किल में अधिक प्रशिक्षण चाहती है साथ ही 38 फीसदी महिलाएं शिक्षा के क्षेत्र में, 21 फीसदी खाद्य पदार्थ के कारोबार व 16 फीसदी ऑनलाइन विक्रेता के रूप में व्यवसाय करना चाहती है। यह शोध भारत में महिलाओं की मजबूत उधमशीलता की भावना d ksn"kkZk gSA[6] नियो इनसाइट के 20 शहरों में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार 25 प्रतिशत महिलाएं आर्थिक मदद के लिए परिवार पर निर्भर है और 24 प्रतिशत महिलाएं कर्ज, अनुदान या निवेशकों पर निर्भर है।[7]

साहित्यावलोकन

कविथा तथा राजन (2014)[8] ने अपने शोध पत्र में यह विश्लेषण किया कि किसी अर्थव्यवस्था की वृद्धि अब काफी हद तक महिलाओं के सशक्तिकरण पर निर्भर करती है। आर्थिक विकास में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना राष्ट्र के लिए अत्यंत आवश्यक है। अध्ययन में तर्क दिया गया है कि अर्थव्यवस्था के मुख्य स्तंभ के रूप में उद्यमी आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। आर्थिक स्वतंत्रता किसी भी देश की मूलभूत आवश्यकता है, और इसे तभी प्राप्त किया जा सकता है, जब महिलाओं को उद्यमशीलता गतिविधियों में भाग लेने के पर्याप्त अवसर दिए जाएँ। शोध में आगे महिला उद्यमियों द्वारा अनुभव की गई विभिन्न चुनौतियों पर चर्चा की गई और यह निष्कर्ष निकाला गया कि उनके नेटवर्क को मजबूत करने और साक्षरता दर में सुधार लाने से महिलाओं का सशक्तिकरण संभव होगा।

गोयल, मीनू व् जय प्रकाश (2011)[9] ने अपने शोध में इस बात पर जोर दिया कि सभी सामाजिक और आर्थिक बाधाओं के बावजूद, महिलाओं ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के साथ प्रभावी रूप से प्रतिस्पर्धा की है और अपनी अलग पहचान बनाई है, उद्यमिता भी इससे अलग नहीं है। अध्ययन में यह विश्लेषण किया गया कि भारतीय अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमियों की प्रगति उतनी तेजी से क्यों नहीं हो पाई, जितनी हो सकती थी। शोध में पाया गया कि इस धीमी प्रगति के प्रमुख कारण पुरुष प्रध ाान समाज, आत्मविश्वास की कमी, आशावादी दृष्टिकोण का अभाव, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, आर्थिक अस्थिरता, जोखिम उठाने की क्षमता की कमी, अशिक्षा और जागरूकता का अभाव हैं।

अनुपम (2019)[10] ने माना कि महिला उद्यमिता आर्थिक विकास और वृद्धि का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। एक उद्यमी के रूप में, महिलाएँ न केवल अन्य लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान करती हैं, बल्कि समाज को प्रबंधन, संगठन और व्यावसायिक समस्याओं के समाधान के नए तरीकों से भी परिचित कराती हैं। शोधकर्ता का मत था कि हर महिला अपने आप में एक उद्यमी होती है, लेकिन

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.26

वे इसे उस रूप में विकसित नहीं कर पाई हैं, जैसा कि होना चाहिए था। उन्होंने महिला उद्यमिता को विभिन्न चरणों में विभाजित किया और भारतीय महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण किया। अध्ययन में यह भी सिफारिश की कि महिलाओं को उद्यमिता में आगे बढ़ाने के लिए उन्हें उचित शिक्षा, पर्याप्त प्रशिक्षण, उचित मार्गदर्शन और परामर्श प्रदान किया जाना चाहिए। साथ ही, उन्हें सॉफ्ट लोन, सब्सिडी, प्रदर्शनियों और व्यापार मेलों की सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

मंगयार्कारासी (2013)[11] ने उजागर किया कि वर्तमान समय में महिलाएँ सभी प्रकार की व्यावसायिक गतिविधियों में भाग ले रही हैं और पुरुषों के साथ सफलतापूर्वक प्रतिस्पर्धा कर रही हैं। इस परिवर्तन को केवल शहरीकरण और औद्योगिकीकरण ही संभव बना सकते हैं। किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सबसे सटीक आकलन उसकी महिलाओं की स्थिति और स्थान को देखकर किया जा सकता है। इस अध्ययन में उद्यमशीलता कार्यों को वर्गीकृत करने के लिए तीन प्रमुख कारकों जोखिम उठाने की क्षमता, संगठन कौशल और नवाचार का उपयोग किया गया। पहले महिलाओं की गतिविधियाँ तीन K किड्स (बच्चे), किचन (रसोई) और निटिंग (बुनाई) तक सीमित थीं। इसके बाद, इन गतिविधियों का विस्तार हुआ और तीनP पिकल्स (अचार)पाउडर और पापड़ के रूप में सामने आया, जो रसोई आधारित कार्यों का ही विस्तार था। हालाँकि, वर्तमान परिदृश्य में महिलाओं ने से आगे बढ़कर तीनE इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स और एनर्जी के क्षेत्रों में कदम रखा है। यह बदलाव शिक्षा दर में वृद्धि और सरकारी नीतियों, व्यापार और वाणिज्य के प्रति जागरूकता बढ़ने के कारण संभव हो पाया है ।

रेड्डी, वेणु गोपाल व नरहरि (2024)[12] में अपने अध्ययन में भारत में महिला उद्यमियों की विभिन्न समस्याओं को उजागर करते हुए भारत में उनके लिए बढ़ते विविध अवसर जैसे बाजार वृद्धि, स्टार्टअप के लिए सहायक पारिस्थितिक तंत्र, व्यवसाय में महिलाओं की बढ़ती जागरूकता और स्वीकृति के बढ़ने की विस्तृत व्याख्या की। साथ ही चुनौतियों पर विजय पाने और अफसरों का लाभ उठाने की रणनीतियो जैसे एक मजबूत नेटवर्क का निर्माण, मेंटरशिप, वित्तीय साक्षरता, विकास की मानसिकता को बढ़ाना तथा लैंगिक समानता की वकालत करते हुए कहा कि भारत में महिला उद्यमी तेजी से बढ़ रही है तथा विभिन्न समस्याओं व् चुनौतियों के बाद भी वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रही है, जो अर्थव्यवस्था के विकास के साथ वैश्विक स्तर पर भारतीय महिलाओं के प्रतिनिधित्व को दर्शाती है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारत में वर्तमान में महिला उद्यमिता की स्थिति का विश्लेषण करना।
2. महिला उद्यमिता के मार्ग में आने वाली रुकावटें, चुनौतियों और उनकी निराकरण के उपायों पर प्रकाश डालना।
3. विकसित भारत के लिए महिला उद्यमिता की संभावनाओं के बारे में अध्ययन करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र में वर्णनात्मक शोध प्ररचना प्रयोग की गई है, जो कि द्वितीय स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों पर आधारित है। वर्णनात्मक शोध रचना के अंतर्गत पूर्व में किए गए अध्ययनो के आधार पर प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों की समीक्षा की गई है। आंकड़ों का संग्रह विभिन्न जनरलों, पत्र पत्रिकाओं, समाचार पत्रों एवं विभिन्न प्रकार की पुस्तकों की सहायता से किया गया है।

महिला उद्यमियों के समक्ष चुनौती

हमारे परंपरागत समाज में महिलाओं को ग्रहकार्य तक ही सीमित रखा गया है, लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संवैधानिक अधिकारों तथा विविध कानून, औद्योगीकरण, नगरीकरण तथा औपचारिक व तकनीकी शिक्षा तक सभी की पहुंच, सरकारी सहायता व अनुदान के कारण महिलाएं अपनी योग्यता व कुशलता के अनुसार अपना व्यवसाय व कार्य क्षेत्र का निर्धारण कर रही है, लेकिन अभी भी उद्यमिता के क्षेत्र में उनका प्रतिनिधित्व काफी कम है, जिसके निम्नलिखित कारण है।

पर्याप्त वित्त की अनुपलब्धताः उद्यमिता को धरातल पर लाने के लिए अति उपयोगी उपकरण वित्त होता है। हमारे देश में अभी भी महिलाएं साधारणता संपत्ति की स्वयं मालिक नहीं होतीए जिससे वे व्यवसाय के लिए ऋण प्राप्त करने हेतु संपत्ति गिरवी रख सकें। हालांकि सरकारी योजनाओं द्वारा उन्हें लाभ प्राप्त हो सकता है। किंतु साधारणता सभी सरकारी योजनाओं की उचित जानकारी न होने के कारण महिलाएं व्यवसाय शुरू करने के लिए आगे नहीं आ पाती। अमेरिकी कंपनी मास्टरकार्ड की एक रिपोर्ट के अनुसार 41% महिलाएं अपने व्यवसाय को स्थापित करने के लिए बेहतर वित्तीय सहायता और फंडिंग विकल्पों की तलाश में हैं।[13]

सामाजिक मानदंडो और सांस्कृतिक बाधाएंः महिला उद्यमिता के लिए सामाजिक मानदंड और सांस्कृतिक बाधाएं महत्वपूर्ण चुनौतियां प्रस्तुत करती है। पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार महिला की प्राथमिक भूमिका घर परिवार तक सीमित है, जिसके कारण महिलाओं को उद्यमशील प्रयासों के लिए सीमित समर्थन और संसाधन मिलते हैं। विवाह, मातृत्व और पारिवारिक जिम्मेदारियों से जुडी सामाजिक अपेक्षाएं महिलाओं को व्यावसायिक गतिविधियों में संलग्न होने से रोकती है। इन समाजिक मानदंडो और सांस्कृतिक बाधाओं को दूर कर महिला उद्यमियों को सशक्त बनाने और भारत में एक अधिक समावेशी और सहयोगी उद्यमशीलता पारिस्थितिक तंत्र बनाने के लिए अत्यंत आवश्यक है।[14]

<u>मेंटरशिप व नेटवर्किंग के अफसरों की कमीं:</u> अध्ययनों से ज्ञात होता है महिलाओं को अपने व्यवसाय के लिए अनुभवी मार्गदर्शक मेंटर खोजने में कठिनाई होती हैए जिससे उन्हें सही दिशा और समर्थन नहीं मिल पाता। जिसके कारण उनकी व्यवसायिक वृद्धि बाधित होती है और वो सीखने और विकास के महत्वपूर्ण अफसरों से चूक जाती है। साथ ही सीमित नेटवर्किंग अवसर महिलाओं को मूल्यवान संपर्क,संभावित निवेशकों और साझेदारियों से दूर रखते हैं जो उनके व्यवसाय को आगे बढ़ाने में मदद कर सकते हैं। एक मजबूत नेटवर्क बनाना, संसाधनों, बाजारों की समझ और व्यावसायिक भागीदारी तक पहुँचने के लिए आवश्यक है, लेकिन महिलाएं अपने पेशेवर दायरे को स्थापित करने में कई बाध ाओं का सामना करती है।[15]

<u>कार्य व् पारिवारिक जिम्मेदारियों में संतुलनः</u> हमारे समाज की सांस्कृतिक अपेक्षाऐ महिलाओं पर यह दोहरा भार डालती है कि वे अपने व्यवसाय के साथ घरेलू कार्यों में पूर्ण संतुलन बना कर चले। महिला उद्यमियों को अपने व्यवसाय के विकास और पारिवारिक भूमिकाओ के बीच संतुलन करना एक बड़ी चुनौती है। अध्ययनों से ज्ञात होता है कि सीमित सहयोग तंत्र और अपर्याप्त बाल देखभाल सुविधाएं इस समस्या को और जटिल बनाती है। इन चुनौती से निपटने के लिए समाज में साझा जिम्मेदारियों को अपनाने की मानसिकता विकसित करना और ऐसी समर्थनकारी नीतियाँ लागू

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.26

करना आवश्यक है जो महिलाओं को कार्य और परिवार की प्रतिबद्धता को प्रभारी ढंग से प्रबंध करने में मदद करें।

शिक्षा व प्रशिक्षण की कमीं: उच्च शिक्षा व तकनीकी ज्ञान में महिलाओं का प्रतिशत अभी भी कम है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे 2019–21 की रिपोर्ट के अनुसार वयस्क पुरुष की साक्षरता 87. 4% तथा महिलाओं की 71.5% है। शिक्षा तथा प्रशिक्षण के अभाव में वे मार्केट संरचनाए आवश्यक तकनीक,व्यापार प्रबंधन तथा भविष्यगामी सांख्यिकीय आंकलनों से अनभिज्ञ रहती है जो कि उद्यम के लिए आवष्यक दशा है।

जोखिम लेने की क्षमता में कमीं: उद्यमी का अत्यावश्यक गुण जोखिम लेने की क्षमता है और महिलाएं अपने सीमित साधनों तथा ज्ञान–प्रशिक्षण के आभाव के कारण जोखिम लेने में असमर्थ रहती है,साथ ही महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं है जो कि उन्में जोखिम लेने के गुणों को और कम कर देता है।

सरकारी योजनाओं और संस्थागत सहायता की जानकारी का अभावं: शिक्षा व प्रशिक्षण की कमी तथा पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण महिलाओं को उद्यम से संबंधित सरकारी योजनाओं तथा संस्थागत सहायता तक पहुँच नहीं हो पाती जिसके कारण वह सरकार और अन्य वित्तीय संस्थानों द्वारा प्रदान किए जाने वाली नियमित व्यवसायीकरण प्रोत्साहन नीतियों, कार्यक्रम और योजनाओं का लाभ नहीं उठा पाती।

भारत की सफल महिला उद्यमी.

इन समस्याओं तथा चुनौतियों के बाद भी विश्वपटल पर हम बहुत सी भारतीय महिलाओं को उद्यमशीलता के क्षेत्र में अग्रणी पाते हैं तथा बहुत सी सफल महिलाएं विश्व की प्रतिष्ठित सूची फोर्ब्स में भी शामिल है और सभी के लिए प्रेरणा भी है।

किरण मजुमदार शाह– बायोकॉन की संस्थापक हैं तथा भारत को अभिनव चिकित्सा संसाधनों के लिए वैश्विक मानचित्र पर स्थापित किया है।

वंदना लूथरा– वीएलसीसी की संस्थापक हैं तथा इन्होंने भारत में सौंदर्य और फिटनेस के उद्योग में क्रांति ला दी है।

फाल्गुनी नायर– नायिका की संस्थापक है और इन्होने ऑनलाइन सौंदर्य प्रसाधन को खुदरा क्षेत्र में बदल दिया है।

ऋचा धर–जीवामें की संस्थापक ने देश में अधोवस्त्र निर्माण में क्रांति ला दी है।

राधिका अग्रवाल– शॉपक्लूज की संस्थापक राधिका ने भारत में ई.कॉमर्स के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उपासना ठाकु– मोविकिव्क की सह संस्थापक उपासना भारत में डिजिटल भुगतान और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

शहनाज हुसैन– सौंदर्य में अग्रणी शहनाज ने हर्बल सौंदर्य देखभाल का पर्याप्त बन चुकें एक वैश्विक ब्राण्ड का निर्माण किया है।

अदिति गुप्ता– मैस्ट्रोपीडिया की सह संस्थापक अदिति अपनी कॉमिक पुस्तको और कार्यशालाओं के माध्यम से महिलाओं को मासिक धर्म स्वास्थ्य के बारे में शिक्षित और सशक्त बनाने के मिशन पर हैं।

विनीता सिंह– शुगर कॉस्मेटिक्स की सह संस्थापक विनीता ने अपने साहसिक और अभिनव उत्पादनो से सौंदर्य उद्योग को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है।

रितु कुमार– प्रसिद्ध फैशन डिजाइनर रितु कुमार ने भारतीय तथा अंतरराष्ट्रीय फैशन उद्योग में एक प्रतिष्ठित ब्राण्ड स्थापित किया है।

महिला उद्यमिता विकास के लिए सुझाव.–

विभिन्न समस्याओं का अध्ययन करने के उपरांत समाधान पर चर्चा करने से अध्ययन की सार्थकता पूर्ण होगी–

1. महिला उद्यमिता को पोषित करने के लिए पर्याप्त तथा सुलभ वित्तीय सहायता एक प्रभावी समाधान होगा। कम ब्याज पर वित्त की सुलभ उपलब्धता अत्यंत आवष्यक है। इस कार्य के लिए सभी सरकारी व सहकारी बैंको में एक निश्चित मात्रा इन्हीं कार्यो के लिए सुरक्षित रखी जानी चाहिए।
2. व्यवसाय शुरू करने के लिए महिलाएं को बढ़ावा देने की आवष्यकता है। एमएसएमई द्वारा अपने क्षेत्र में शिक्षण संस्थानों में कैंप लगाकर यह कार्य हो सकता है। व्यापक कौशल विकास कार्यक्रम, तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम और सेमिनार आयोजित किए जाने चाहिए ताकि महिलाओं को उद्यमशील गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जा सके।
3. महिलाओं के बीच साक्षरता दर बढ़ाने के लिए मुफ्त व मुक्त शिक्षा, छात्रवृत्ति और प्रेरणा कार्यक्रम लागू किए जाने चाहिए तथा आईटीआई जैसे संस्थानों को व्यवसायिक प्रशिक्षण के लिए अधिक तैयार करने की आवश्यकता है।
4. परिवार व समुदायों को भी महिला उद्यमिता के प्रति संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है ताकि उन्हें स्थानीय व वृहत स्तर पर पर्याप्त सहयोग मिल सके।
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत कौशल विकास व रोजगारपरक कार्यक्रमो को और अधिक प्रभावशाली ढंग से लागू करने की आवश्यकता है जिसके लिए आवश्यक इनफ्रास्ट्रक्चर व प्रशिक्षण के साथ कच्चे माल और मार्केटिंग की जानकारियां भी प्रदान की जा सके ताकि महिलाएं को उद्यमशीलता के क्षेत्र में आवश्यक ज्ञान प्राप्त हो सके और वह उधामिता के क्षेत्र में उचित प्रतिनिधित्व कर सके।

निष्कर्ष

अंत में कहा जा सकता है कि हमारे देश में महिला उद्यमिता का भविष्य महत्वपूर्ण संभावनाओं से भरा हुआ है। हालांकि महिलाएं उद्यमिता के क्षेत्र में बहुत सी समस्याओं का सामना करती हैं तथा कई बार पहल व जोखिम उठाने की कमी व पर्याप्त जानकारी के अभाव में वह इस क्षेत्र में अपना प्रतिनिधित्व नहीं कर पा रही है। लेकिन वहीं दूसरी ओर हम बहुत सी भारतीय महिलाओं को उद्यमिता के क्षेत्र में विश्व पटल पर भी देखते हैं जो कि पूरी दुनिया को अपना लोहा मनवा रही है। साथ ही

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.26

इस बात की आवश्यकता है कि राज्य व सरकार महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए अपनी नीतियों को और अधिक लचीला, सरल तथा सभी की पहुँच तक बनाएँ ताकि महिलाओं को अपने व्यवसाय को शुरू करने और बढ़ाने के लिए सशक्त बनाने से न केवल आर्थिक विकास होगा बल्कि लैंगिक समानता और सामाजिक विकास में भी योगदान मिलेगा।

संदर्भ

1. https://wwwdristiias.gov.in>women_enterpreneurs.Dated05.03.25 at 21:30.
2. https://visionias.in>womenenterpreneurs.in.india.Dated05.03.25 at 22:15
3. सिंह, गीता, 'बंधनों को तोड़ती नारी,' सुलभ इंडिया, मार्च 2017, पृ० सं०–08
4. वही
5. वही
6. हिंदुस्तान, नई दिल्ली, 8 मार्च 2025 पृ० सं०–10
7. वही
8. Kavitha. R, & Rajan, D. (2014). 'Empowering women through entrepreneurship: Challenges and advantages'. International Journal of Research and Development - A Management Review (IJRDMR)
9. Goyal, Meenu., & Jai, Prakash. (2011). Women entrepreneurship in India-problems and prospects. International Journal of Multidisciplinary Research (IJRD), 1(5)
10. Anupam. (2019). 'A study on women entrepreneurship in India'. International Journal of Social Relevance & Concern, 7(5).
11. Mnagayarkarasi, K. (2013). Women achievement and power towards entrepreneurship. Indian Journal of Research, 2(1).
12. Reddy Ram, Venugopal R., 'Women enterpreneurship on India:Opportunities and Challenges'. MadhyaBharti-Humanities and Social Sciences. Vol-85,No.12, Jan-June2024, Pg. 49.
13. हिंदुस्तान, नई दिल्ली, 8 मार्च 2025 पृ० सं०–10।
14. Reddy Ram, Venugopal R., 'Women enterpreneurship on India:Opportunities and Challenges'. MadhyaBharti-Humanities and Social Sciences. Vol-85,No.12, Jan-June2024, Pg. 49.
15. Reddy Ram, Venugopal R., 'Women enterpreneurship on India:Opportunities and Challenges'. MadhyaBharti-Humanities and Social Sciences. Vol-85,No.12, Jan-June2024, Pg. 50.